RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 27 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 9 दिसम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

परम्परा और मेहनत के बल पर आगे बढ़ती संस्था

'द्वप्वौल्टु' का अभियान

कार्यालय प्रतिनिधि

अल्मोड़ा/धरमघर। हमारी परम्परा और मेहनत मिलकर किसी भी सफलता की कहानी को पूरा कर सकती है। ऐसी ही शानदार प्रयास किया है- 'द्वप्वौल्टु' संस्था ने। महिलाओं और किसानों को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में संस्था ने जिस प्रकार से शुरुआत की है वह सभी के लिये प्रेरणास्रोत है।

द्वप्वौल्टु संस्था के सदस्य इस समय खुशी मना रहे है। क्योंकि संस्था द्वारा एक ई-रिकशा का क्रय किया गया है। इसका विधिवत उद्घाटन किया गया, सहयोगी सचिव श्रीमती गीता रावत थीं। संस्था सबको जोड़ने का सद् प्रयास कर रही है।

बताते चलें कि बेरोजगार युवाओं को उत्साहित करने के लिये डी. एस.पंचपाल के मन में बहुत पहले ही एक ऐसी संस्था का विचार था जो अपनी परम्परा के साथ प्रकृति से जोड़े रखे। इसके लिये अभियान शुरू किया और आज संस्था को बेहद विस्तार मिला है। लछिमा, ओखरानी, तोराथल, फल्याटी, तिमलाबगड़ मल्लादेश, पचार, रमताल, महोली इत्यादि दूरस्थ गाँवों में खेती-किसानी व कुटीर उद्योगों को लेकर युवा सक्रिय हुए हैं। पहाड़ की पलायन समस्या का अध्ययन करने के बाद जिस प्रकार का कार्य द्वप्वौल्टु स्वयं सेवी संस्था कर रही है वह अपने रास्ते तलाशने का सुनहरा अवसर भी है।

बताते चलें कि संस्था का गठन अक्टूबर 2018 में किया गया। तब से काफी बेरोजगार लोगों को जोड़ा गया है और महिलाओं को घर पर ही रोजगार सुविधा प्रदान की जा रही है। इसी क्रम में संस्था द्वारा एक ई-रिक्शा का क्रय किया गया। जिसके आय से 5 प्रतिशत संस्था के आय में जमा होगी और असहाय और समाज के अन्तिम छोर पर बैठे परिवार या व्यक्ति को आर्थिक मदद पहुंचाई जाती है। इस पर अभी तक दो लोगों मुनस्यारी से दुर्योधन सिंह लस्पाल और अल्मोड़ा से प्यारेलाल को 5 और 2 हजार की मदद की गई। संस्था जरूरतमंद को ही ही इस प्रकार की मदद करती है ताकि वह बिना हिचक लोगों से जुड़ सके।

संस्था की अध्यक्ष श्रीमती भावना टोलिया, सचिव गीता रावत, कोषाध्यक्ष श्रीमती हंसा मर्तोलिया के अलावा अन्य सदस्य श्रीमती भावना, श्रीमती दया जगपांगी, श्रीमती पुष्पा रावत, श्रीमती भावना रावत, श्रीमती खीला लस्पाल, श्रीमती नीमा रावत इस कार्य में अग्रणीय रूप से जुटे हैं।

गोकर्ण सिंह मर्तोलिया

समय के साथ चलना और संभलना होगा

डॉ. पंकज उप्रेती

दुनिया में चाहे कितनी ही तरक्की कर लें, हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिये, जिस पहचान से हम आगे बढ़ते हैं वह हमारी संस्कृति है। यह उद्गार हैं समाजसेवी गोकर्ण सिंह मर्तोलिया के। ज्वार-मुन्स्यार की फसक के साथ हमेशा सामाजिक गतिविधियों में अग्रणीय मर्तोलिया जी जीवन के उत्तरार्द्ध में भी पूरी तरह समाज को समर्पित हैं।

स्व.माधो मर्तोलिया के कुनबे की बात करते हैं तो पता चलता है कि इनके तीन पुत्र- विजय सिंह, चन्द्र सिंह और प्रताप सिंह हुए। चन्द्र सिंह मर्तोलिया की अगली पीढ़ी में उनके पुत्र मोहन सिंह, रतन सिंह और प्रताप सिंह की अगली पीढ़ी में दुर्गा सिंह, गोकर्ण सिंह, डॉ. प्रहलाद सिंह, इं. ललित सिंह मर्तोलिया हुए। जब सामाजिक ताने-बाने में इनका आंकलन हो तो बात और आगे जाती है कि पूरा परिवार किस प्रकार किसी न किसी रूप में सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रहा है। इसी कुनबे के गोकर्ण सिंह का जन्म पिता स्व.प्रताप सिंह माता श्रीमती भवानी देवी के घर 7 जुलाई 1947 को जोहार घाटी के मर्तोली में हुआ। अपनी स्थिति-परिस्थिति के अनुसार जैसे सभी का प्रकृति के अनुरूप सधा व्यवहार था वही इनमें था। तब माइग्रेशन के लिये इनका परिवार बला सुरिंग व मर्तोली आता-जाता रहता है। आज तक भी इस परिवार के सदस्य अपनी परम्परा को बनाए हुए हैं। घर के सदस्य वयोवृद्ध श्री दुर्गा सिंह मर्तोली बराबर जाते हुए युवाओं को उनकी भूमि के प्रति जागरूक करते रहे हैं। डॉ.प्रहलाद सिंह हल्द्वानी में निवास करते हुए जोहार की बेहतरी के लिये होने वाली गतिविधियों में हमेशा अग्रणीय रहे हैं। देहरादून में निवासरत इं. ललित सिंह जी कर्मशील युवाओं को प्रोत्साहित करने में संलग्न रहे हैं। इसी प्रकार गोकर्ण सिंह मर्तोलिया ने मुनस्यारी में रहते हुए तमाम संस्थाओं में संरक्षक, अध्यक्ष की जिम्मेदारी के साथ एक कार्यकर्ता के रूप में उसे संवारा है।

गोकर्ण सिंह जी कहते हैं शुरू से ही संघ के दिग्गजों का साथ रहा लेकिन समाज हित के कार्यों के लिये वह चौकस रहे। शिशु मन्दिर, विद्या मन्दिर को आगे बढ़ाना हो या मल्ला जोहार विकास समिति के उद्देश्यों को बताना हो या जोहार क्लब के कार्यों को गति देनी हो, वह संलग्न रहे हैं।

वाकेई श्री मर्तोलिया सामाजिक गतिविधियों में लगातार जुटे रहते हैं। उनका कहना है- जिस प्रकार का बदलाव देख रहा हूँ वह कहीं पर चमत्कृत करता है लेकिन तेजी का यह बदलाव सोचने पर भी मजबूर कर देता है। वह कहते हैं- समय के साथ चलना जरूरी है किन्तु सम्भलना होगा। जिस धैर्य के साथ हमारे बड़े-बुजुर्ग आगे बढ़े थे उससे सीख लेनी चाहिये। अपनी जड़ों से जुड़े लोग इस बात पर अमल भी कर रहे हैं। यही बात नई पीढ़ी को बतानी है कि वह शिक्षित हों किन्तु अपने बुजुर्गों के बनाए रास्ते हमेशा याद रखें।

संस्कृति

श्री पुर्ब्याल देवता का इतिहास

जगदीश सिंह बृजवाल

जोहार घाटी के गर्खा बिलज्वालो का ग्रष्ट देव श्री पुर्ब्याल देवता का प्रभाव अतीत से आज उसी तरह बना है। विशेषकर जीवन रक्षक के रूप में प्रभाव के कयी उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता हैं। जो घटना परिदृश्य है.. गुरु गोरखनाथ के अनुयायी नाथपंथी बालकों की प्रेत्आत्मा जो पाँच भाई पुर्ब्याल देवात्मा के रुप में प्रकट हुआ। जिसकी कथा-कहानी ढिमढिमिया चोटी से गोरी नदी घाटी स्थित ग्राम तल्ला दुम्मर पुर्ब्याल बाटिका (मन्दिर स्थित जंगल क्षेत्र) मन्दिर प्रतिष्ठापित की एक लम्बी कहानी से वर्णित किया जाता है।

गाँव के मध्य से ठीक दक्षिण दिशा की ओर लगभग 500 मी. लम्बी पश्चिमी ढलान में जंगल के बीच दो प्राचीन मन्दिर स्थापित है। जिसमें एक

प्राचीन मूल मन्दिर भी है। धीरे-धीरे समयानुसार मंदिर के कयी शाखाओं का विस्तार होता रहा है. आज कयी गर्खाओं (जाति) के गाँव में भी पुर्ब्याल देवता का मन्दिर स्थापित किया गया है।

पुर्ब्याल जी का सर्वप्रथम मन्दिर के विषय में लोगों का कथन है कि ढिमढिमिया में रहने वाले गुरु गुरखेनाथ (गोरखनाथ) के अनुयायी नाथपंथी समुदाय के लोग ढिमढिमिया में आकर निवास करने लगे थे। जिनका जीवन यापन का साधन भिक्षाटन के अतिरिक्त जगलों पर ही निर्भर था। तब इस गोरीफाट(मुनस्यारी) क्षेत्र में प्रकृति देव हरदेवल की पूजा भी की जाती थी। पूजा यहाँ निवास करने वाले लोगों के द्वारा सामुहिक रूप से की जाती थी।

एक समय की बात है जब दो जातियों द्वारा हरदेवल पूजा की तिथि

शेष पृष्ठ 3 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जमीनों की लूट पर कील!

उत्तराखण्ड सरकार ने स्थानीय लोगों को सावधान किया कि वे राज्य से बाहर के उन लोगों से भूमि का सौदा न करें जिन्होंने भू कानून का उल्लंघन कर जमीनें खरीदी हैं, इससे स्थानीय लोगों की वित्तीय नुकसान हो सकता है। सचिव राजस्व आनन्द श्रीवास्तव के अनुसार राज्य में मौजूदा भू-कानून के उल्लंघन से जुड़े मामलों में प्रशासन स्तर से कार्रवाई जारी है। कार्रवाई के बीच ऐसी सूचनाएं आ रहीं कि राज्य से बाहर के लोग, जिन्होंने पूर्व में भू-कानून का उल्लंघन कर जमीनें खरीदी हैं, वे अब इन जमीनों को राज्य के लोगों को बेच रहे हैं। इसलिए स्थानीय जनता से अपील है कि ऐसे लोगों से किसी भी तरह से भूमि का सौदा न करें ताकि भविष्य में इन्हें किसी भी तरह का वित्तीय नुकसान न हो। यदि राज्य से बाहर के किसी व्यक्ति ने भू-कानून का उल्लंघन कर राज्य में जमीन खरीदी है तो उस प्रकरण में भू-कानून के स्वष्ट प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जाएगी। जिला स्तर पर डीएम को भी जमीनों की रजिस्ट्री में सतर्कता बरतने को कहा गया है।

सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों और दावों के बाद कहा जा सकता है कि जीमनों की लूट पर कील ठोकी जा रही है और आगे से जमीनों की लूट पर अंकुश लगेगा। लेकिन यह लूट कहने और आंकड़े जुटाकर बन्द नहीं हो सकती है। इसके लिये सरकार के अलावा उत्तराखण्ड के मूल निवासियों को सतर्क हो जाना चाहिये। मध्य हिमालय का यह राज्य चीन और नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ है, ऐसे में यहाँ की स्थितियों को मजबूत और अनुकूल बनाए रखने के लिये किसी भी तरह की ढिलाई ठीक नहीं है।

जमीनों की लूट रोकने के लिये जिस प्रकार से वर्तमान में चर्चा हो रही है और प्रदर्शन भी हुए हैं। यह सब पहले भी होते रहे हैं। उत्तराखण्ड के तराई में जमीनों पर कब्जे करने वालों को राजनेताओं का संरक्षण मिलता रहा और कृषि भूमि के अलावा अन्य कार्यों के नाम पर अथाह लूट मची। धीरे-धीरे पर्यटन के नाम पर पहाड़ों पर भी जमीन घेरने वालों की नज़र लगी। यह सारी स्थितियां पहाड़ को पहाड़ीपन से रीता करने वाली हैं। वर्तमान में जन जागरूकता और सरकार का दावा उम्मीदों भरा है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

समर्थन में अमेरिका में रैली

वाशिंगटन। अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया के शहर सिलिकॉन वैली में भारतीय अमेरिकियों ने कनाडा और बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफ हो रही हिंसा के विरोध में एकजुटता रैली का आयोजन किया। मिलपिटास सिटी हॉल में बड़ी संख्या में भारतीय अमेरिकियों को सम्बोधित करते हुए समुदाय के प्रमुख नेताओं ने हिन्दू अल्पसंख्यकों पर हमले के बारे में चर्चा की।

यामांडू ओरसी उरुग्वे के नए राष्ट्रपति

मोटेवीडियो। उरुग्वे के वामपंथी उम्मीदवार यामांडू ओरसी ने कड़े मुकाबले में सत्तारूढ़ गठबन्धन को हराकर देश के नए प्रधानमंत्री बने हैं। चुनाव में ओरसी से अत्यन्त नजदीकी मुकाबले के बाद बवाने डोलगाडो ने मतगणना जारी रहने के बावजूद हार स्वीकार कर ली।

मशहूर लेखिका ब्रैडफोर्ड का निधन

न्यूयॉर्क। ए वूमन ऑफ सब्सटेंस नामक उपन्यास से चर्चा में आई ब्रिटिश लेखिका बारबरा टेलर ब्रैडफोर्ड का 91 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने 40 वर्ष की उम्र में ए वूमन ऑफ सब्सटेंस उपन्यास लिखकर तहलका मचा दिया था। उसके बाद के दिनों में एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे।

मानवाधिकारों का सम्मान करे पाकिस्तान

वाशिंगटन। पाकिस्तान में हजारों लोगों द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई के लिये रैली निकाली जाने पर उनके खिलाफ कार्रवाई को लेकर अमेरिका ने पाकिस्तान के अधिकारियों से मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता का आदर करने तथा देश के कानूनों के प्रति सम्मान सुनिश्चित करने का आह्वान किया।

भारत की प्रस्तावित यात्रा के बाद चीन जाएंगे

कोलम्बो। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनूरा कुमारा दिसानयके भारत की प्रस्तावित आधिकारिक यात्रा के बाद चीन का दौरा करने की योजना बना रहे हैं। कैबिनेट प्रवक्ता नलिन्दा जयतिस्मा ने बताया कि चीन के राजदूत ने दिसानायके को आधिकारिक निमन्त्रण सौंपा है।

स्पेसएक्स ने अंतरिक्ष में उपग्रह प्रक्षेपित किए

लॉस एंजिल्स। अमेरिका की निजी अन्तरिक्ष कम्पनी स्पेसएक्स ने 23 स्टारलिंक इंटरनेट उपग्रहों को कक्षा में प्रक्षेपित किया है। उपग्रहों को फ्लेरिडा के केप कैनवेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से फाल्कर 9 राकेट के जरिए पूर्वी समय मण्डल के अनुसार प्रक्षेपित किया गया।

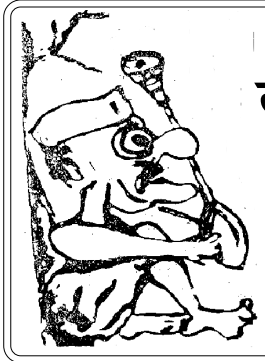

फसक

दाज्यू, श्रृंगार के बिना खेल खिलौने सब अधूरे ठैरे

अरक्या-फरक्या के कोई नहीं देखता है बल

दाज्यू, गौलापार के अन्तर्राष्ट्रीय स्टपोर्टस काम्प्लेक्स में क्रिकेट स्टेडियम को फुटबाल प्रतियोगिता के लिये सजाया जा रहा हे। 38वें राष्ट्रीय खेल के लिये लन्दन से राई सीट नाम की घास का बीज मंगवाया गया है। दाज्यू, लग जाने दो लन्दन वाली घास। श्रृंगार के बिना खेल-खिलौने अधूरे ठैरे। दुकान हो या मकान, मैदान हो या सड़क सब चकाचक का जमाना है। झूलने को झूले, चढ़ने को लिफ्ट, खाने को चाउमिन, पीने को बोतल वाला पानी.....सब नए जमाने का खेल ही हुआ। हम क्या खा रहे हैं, क्या पहन रहे हैं, क्या करने जा रहे हैं, अरक्या-फरक्या के कोई नहीं देखता है बल। दाज्यू, चण्डाक में ट्यूलिप गार्डन के नाम पर बीस लाख खर्च होने के बाद योजना फेल हो गई है बल। सूचना का अधिकार में जानकारी जुटाने वाले जुटा चुके हैं और जिला पर्यटन अधिकारी का कहना है कि मौसम अनुकूल न होने और बीजोत्पादन न होने से इसमें बल्ब का रोपण रोकना पड़ा। अब इसमें बल्ब के रोपण की सम्भावना कम है। दाज्यू, निकाय चुनाव में प्रत्याशी अब ज्यादा खर्च कर सकेंगे। राज्य निर्वाचन आयोग ने अधिकतम खर्च की सीमा बढ़ाई तो अपना सुक्खन खुश हो गया। दाज्यू, आप तो जानने वाले ठैरे कि खर्च की सीमा का कुछ पता नहीं। अरक्या-फरक्या के कौन देखने वाला है? सेटिंग भी कुछ चीज होने वाली हुई। कागज में क्या लिख दिया और क्या करने वाले हो, कौन जाने। लिखा हुआ ही फकीर हुआ आजकल के जमाने में।

पूर्व विधायक भाजपा नेता मालचन्द और उत्तरकाशी जिला पंचायत की पूर्व अध्यक्ष जसोदा राणा पर करोड़ों की जमीन खुर्दबुर्द का आरोप के बाद जाँच के आदेश हो चुके हैं। दाज्यू, अपने श्रृंगार के लिये हद तक गुजर जाने वाले ठैरे। एनआरआई बुजुर्ग महिला पर यह आरोप लगाया है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

कार्य के प्रति कठोर परिश्रमी, अनुशासनप्रियता जिनकी पहचान रही है

राजस्व सेवा(सहा.आयुक्त) जी.एस. दुग्ताल सेवानिवृत्त

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। कार्य के प्रति कठोर परिश्रमी, अनुशासनप्रिय के रूप में पहचान के अलावा रंगकर्मी व लेखक के तौर पर चर्चित भारतीय राजस्व सेवा के सहा. आयुक्त विभाग केन्द्रीय जीएसटी ऑडिट कार्यालय जीवनसिंह दुग्ताल सेवा निवृत्त होने के बाद अब समाज में नई ऊर्जा के साथ अपनी संस्कृति के लिये सक्रिय हो चुके हैं।

बताते चलें कि शैशवस्था से ही शिक्षा के प्रति विशेष जागरूक श्री जीवन सिंह दुग्ताल ने अपनी शिक्षा माध्यमिक स्थर अपने गाँव- दुग्तू, गोठी स्कूल से ही पास किया था। यह तत्कालीन स्थापित दुग्तू, गोठी जुनियर हाईस्कूल 1974-75 का दूसरा ही बेच था, इण्टरमीडिएट धारचूला से पास करने के उपरान्त उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया गया और स्नातक एवं स्नातकोतेर डिग्री (राजनीति विज्ञान) से उतीर्ण के उपरान्त लखनऊ विश्वविद्यालय से ही पीएचडी में भी प्रवेश लिया लेकिन उसी दौरान स्टाफ सिलेक्शन कमीशन (SSC) परीक्षा द्वारा चयन से केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क मण्डल मेरठ में 15 सितम्बर 1987 को ज्वाइन किया गया। वर्ष 1993 को निरीक्षक, वर्ष 2002 को अधीक्षक उसके बाद वर्ष 2020 को ऑल इण्डिया रैंकिंग के अनुसार इन्हें सहायक आयुक्त (भारतीय राजस्व सेवा) पद में प्रोन्नति दी गयी। विभाग को 37 साल 2 माह 16 दिन पूर्ण सेवा देने के उपरान्त केन्द्रीय विभाग से सफलता पूर्वक सेवानिवृत हुए हैं। अपनी इस सेवा के दौरान मेरठ, रामपुर, खटीमा, काशीपुर, सहारनपुर, नोएडा, गाज़ियाबाद, मुरादाबाद, देहरादून और हल्द्वानी में कार्यरत रहे। सेवा में आने के बाद भी अधीनस्थ राज्य सेवा परीक्षा भी पास की थी, जिसमे नायब तहसीलदार 1989, और चकबन्दी 1993 बेच में, जिसे ज्वाइन नहीं किया। शिक्षा एवं उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में पास होने का सम्पूर्ण श्रेय वह अपने माता -पिता जी एवम भाई-बहिन को देते हैं। इनके दो बच्चे एक पुत्र एक पुत्री है। बेटी द्वारा MBA डिग्री के बाद दिल्ली में प्राइवेट जॉब में है और बेटा ने 4 वर्षीय टूरिस्म कोर्स पूरा करने के बाद भविष्य की तेयारी में लगा है।

प्रकृति प्रेमी और रं संस्कृति के प्रसार प्रचारक:- बचपन से ही प्रकृति प्रेमी और अपने देव भूमि के मूल संस्कृति से लगाव के कारण ही श्री दुग्ताल ने पढाई हो या नौकरी के दौरान सदैव अवकाश पर अपने ही गाँव, समाज में जाकर बुजुर्गों से मिलकर, चर्चा कर देव भूमि के प्राकृतिक रहस्य, रं सस्कृति को बारीकी से समझने का अथक प्रयास किया। जिस कारण 'रं-लेभा' त्रैमासिक पत्रिका और 'अमटीकर' वार्षिक पत्रिका में कुछ न कुछ लिखते रहे हैं। रं संस्कृति को कायम रखने के लिए दैनिक जीवन में भी सदैव अपनी मूल भाषा रं ल्वो को ही बोलचाल की भाषा को ही वरीयता दी है। जिस कारण परिवार के सारे सदस्य मूल भाषा में ही आपसी बातचीत का माध्यम भी बना हुआ है। अपनी मूल भाषा, देव भूमि की मूल संस्कृति को कायम रखने के लिए सोशल मीडया/यूट्यूब द्वारा भी पत्नी श्रीमती पुष्पा दुग्ताल के साथ समर्पित भाव से जुटे हैं, जिसमे केवल अपनी रं भाषा में ही स्वयं (पति-पत्नी) द्वारा रचित नवीन रं ल्वो (बोली) लोक गीत, नृत्य गीतों को दिया गया है। उन्होंने सभी विषयो में गीतों को लिखकर गायन द्वारा रं समाज के गीतों को प्रत्येक छोर तक पहुँचाने का भी भरसक प्रयास किया है जिससे नवीन पीढ़ी इन गीतों से प्रेरित होकर अपनी संस्कृति से जुड़ी रहे।

साहित्य व रं समाज के प्रति विशेष रुझान :- अपने देवभूमि गाँव, दुग्तू (दारमा) के प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को लिखित रूप में लाने का पहला प्रयास पत्रिका 'दुनजन' (राखू) के नाम से कुछ ऐतिहासिक एवं जनश्रुतियो को सुनहरे पन्नों में उतारने भरसक प्रयास इनके द्वारा किया गया है। पर्यटन की दृष्टी से दारमा घाटी को विश्वपटल पर लाने का भी एक महत्वपूर्ण प्रयास पत्रिका 'देव भूमि : दारमा के दर्शनीय स्थल' नाम से जल्दी ही दलिंग दारमा सेवा समिति के बैनर प्रकाशित किया जा रहा है। रं जनों (दारमा, व्यास और चौंदास) की सबसे बड़ी लोक कल्याण कारी संस्था रं कल्याण संस्था में भी विगत 2018 से सह सम्पादक पद में रहकर 'रं लेभा' पत्रिका एव सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी हमेशा महत्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं। श्री दुग्ताल के सेवानिवृत के सुअवसर पर कार्यालय में कार्यरत समस्त सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और मित्रगणों द्वारा उनके अच्छे स्वास्थ और दीर्घायु की हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

श्री पुर्ब्याल देवता का इतिहास.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

निर्धारित की गई, तब दोनों स्थानों पर पूजा पाठ एक ही दिन निश्चित किया गया था किन्तु दोनों समुदायों के पुजारी एक ही व्यक्ति के होने से पुजारी के लिए असमंजस की स्थिति आ गयी। तिथि को आगे पीछे कराने में पुजारी नाकामयाब रहा। दोनों जातियों ने इसे अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ लिया। कोई भी तिथि आगे पीछे करने को तैयार नहीं हुए और पुजारी को पूजा में न आने पर कठोर चेतावनी, जान से मारने की धमकी भी दे दी गयी।

मरता क्या नहीं करता, पुजारी दु:खी होकर करूण रुदन के साथ अपने देव हरदेवल को पुकारते रहा। हे! मेरे देवाधिदेव हरदेवल जी 'अब मेरी प्राणों की रक्षा आपके शिवा कोई नहीं कर सकता है'। कल का दिन मेरे जीवन का अन्तिम दिन होगा। कल में काल का ग्रास बनकर रहूँगा। हे! प्रभु मेरी जान की रक्षा करो। पुजारी अन्तर्ध्यान हो गया।

हरदेवल देव ने अपने भक्त की पुकार को सुन लिया। जिस तिथि को दोनों समुदाय के द्वारा पूजा-पाठ आयोजित किया जाना था, सभी पूजा की तैयारी सामाग्री इकट्ठा कर अपने स्थापित हरदेवल के मन्दिर में पहुँचकर पुजारी का इन्तजार कर रहे थे तभी हरदेवल ने अपने शक्ति प्रभाव से ऐसा ताण्डव मचाया लोग अपनी प्राण रक्षा हेतु इधर उधर भागते दिखे। आंधी-तूफान, आकाशीय गर्जना, बिजली चमकना, घनघोर बारिश, हवा, धूल-धक्कड़ तथा हवा में उड़ते पूजा के लिए इक्ठ्ठी सामाग्री, पानी का सैलाब, चारों ओर त्राहिमाम-त्राहिमाम करते लोग पूजा की बात छोड़कर जान बचाते इधर-उधर भागने लगे। पुजारी की जीवन रक्षा हरदेवल देव ने आँखिर कर दिया।

उन्हीं दौरान ढिमढिमिया में नाथपंथी समुदाय के लोग भी अपनी-अपनी घास-फूस की झोपडियां बनाकर परिवार के साथ रहते थे। भिक्षाटन, जगलों पर आश्रित होकर ही अपनी भोजन व्यवस्था जुटाते थे।

हरदेवल पूजा के दिन नाथपंथी घर के पुरुष-महिला दूर दराज जंगल में अपने भोजन व्यवस्था हेतु गये थे। घर पर केवल छोटे बच्चे ही थे। उन लोगों के घरों में अपने अनाज, अन्य समाग्री रखने हेतु निगाल के ढनढेला (गोलाकार मुंह वाला रिंगाल का बना बड़ा गोल टोकरी नुमा वस्तु), प्याटरी (लम्बाई अधिक चौड़ाई कम से बना बक्सा नुमा) आदि हस्तकला की भी चीजें बनी रहती थी। जब आंधी तूफान, बारिश हो रही थी तब बच्चे सभी घरों में बने ढनढेला में जाकर छिप गये किन्तु तूफान ऐसा था कि पूरा घर ही हवा में उड़ने लगा, ढनढेला भी उड़कर ढिमढिमिया के ढलान पर गोरी नदी तक पहुँचने लगे। उसी में पाँच ढनढेला पहाड़ पर टकराकर गोरी नदी वार तल्ला दुम्मर गाँव से नीचे मलिया ढुंग (जंगली कबूतर बैठने वाला पत्थर) तक पहुँच गया था। इन्ही ढनढेला में छिपे मृत बच्चों की प्रेतात्मा ने पुर्ब्याल देवता के रूप में देवात्मा का रूप ले लिया था।

सन् 1670 में चन्द राजा बाजबहादुर के द्वारा लोरू बिलज्वाल को कोशालीबाडा जागीर प्राप्ति के पश्चात ही तल्ला दुम्मर में बिलज्वालो ने अपनी बसासत कायम किया। गाँव में रहने के पश्चात ही जिस गाँव के प्रमुख व्यक्ति को स्वप्न हुआ था। तभी सुषुप्ता अवस्था में पड़े प्रेतात्माओं ने देवात्मा रूप धारण कर सन्देश दिया कि अब पाँचों भाईयों का मन्दिर प्रतिष्ठापित कर दिया जाए। प्रमुख व्यक्ति ने स्वप्न की घटना सभी ग्रामवासियों के सामने उजागर करने पर उसी अनुरूप गाजे-बाजे के साथ उसके आस-पास एक समतल भूमि पर मन्दिर स्थापित कर पूजा-पाठ का कार्य भी प्रारम्भ किया गया। गाँव के पधान घराने से पुजारी की नियुक्ति हुई, सम्भवत: आज तक वही रस्म रिवाज तक चली आ रही है।

जनश्रुति के अनुसार कहा जाता है कि कालान्तर में कुछ समय बाद पुर्ब्याल देवता द्वारा मन्दिर गाँव से नीचे स्थापित होने के कारण पुन: पुजारी को स्वप्न आया कि मन्दिर को कहीं अन्यत्र साफ स्वच्छ, पवित्र स्थल पर स्थापित किया जाय। जो आज का मूल मन्दिर पुर्ब्याल देवता का स्थापित है। यह स्थल पूर्व में घने जंगलों से घिरा था। जिसमें वातावरण के अनुसार हर प्रकार के पेड-पोधे उपलब्ध थे। जो स्वयं पुर्ब्याल देवता की देन कही जाती है। जो बुजुर्गों के मुँह सुनी बातें भी है।

आज दो पूर्व के मन्दिर का उच्चीकृत नवीन भव्य मन्दिर दो राठो के द्वारा निर्मित किया गया है तल्ला राठ, मल्ला राठ धूरा वालों की बसासत मल्ला घोर पट्टा होने के कारण शाखा वहाँ भी स्थापित है।

लेखक ने बचपन में पुर्ब्याल बाटिका के दृष्टिगत दृश्य की स्मृतियों का वर्णन किया है। जिसमें बिभिन्न प्रकार पेड़-पौधे बांज, बुरांश, दालचीनी, काफल, कोल, सीलल्ग, अँयार, उतीस, घाटियों में पाये जाने वाले पेड़-पौधें लगभग सभी प्रकार के वृक्ष इस छोटे से कानन में उपलब्ध थे। जो इसकी विशिष्ट विशेषता थी। पूर्व में इस वन में कई जीव-जन्तओं, पशु-पक्षीयों ने अपना आसरा भी बनाया था। आज इन्हीं आँखों के सामने वैसा कुछ भी नजर नहीं आने से दिल द्रवित हो उठता है। हमें आज रहे-सहे कानन का संरक्षण, संवर्धन हेतु कड़े-से -कड़ा कदम उठाने की आवश्यकता है। अपने इतिहास, ग्रष्ट देव के धरोहर को बचा सके। पुर्ब्याल देवता की शक्ति में आज भी तनिक कमी नहीं आई है। भक्तजनों का आने का सिलसिला सदैव वैसा ही पूर्ववत की भाँति बनी है..

पुर्ब्याल देवता का मूल मन्दिर तल्ला दुम्मर ग्राम मुनस्यारी तहसील से लगभग 15 किमी की दूरी पुराने जोहार जाने वाले मार्ग गोरी नदी से लगभग 150 मी0 चढ़ाई पर स्थित है। जहाँ मोटरमार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है इसी के करीब तल्ला दुम्मर गाँव से 50 मी0 ऊपर ऐतिहासिक भीमकाय ल्वांल जाति के नाम गोलाकार खुबसूरत ल्वांल ढुंग (पासाण खण्ड) भी है दुम्मर ग्राम से लगभग 2 किमी की दूरी ढलान पर सुन्दर प्राकृतिक झरना सुरिंगगाड़ पर स्थित पर्यटकों को आकर्षित करता है। तल्ला दुम्मर तथा मल्ला दुम्मर दो गर्खाओ का ग्राम सभा दुम्मर के नाम ही है। पुर्ब्याल देवता के मन्दिर में सच्ची श्रृद्धा से पहुँचने पर संकट हरण व जीवन रक्षा की मन्नते अवश्य पूरी होती हैं। यहाँ पहुँचने पर भक्तगणों का मन अवश्य प्रफुल्लित हो जाता है। जय पुर्ब्याल देवाय नम:।

बाल कविता

पेन और पेन्सिल

पेन बोली पेन्सिल से
मैं हूँ खासमखास
तब ही तो लोग मुझे
रखते दिल के पास।
रखते दिल के पास मुझे
अंगुलियों से सहलाते
काम लेकर बारम्बार मेरा
मेरी निब को ढक देते।
लगी धकियाने पेन्सिल को
पेन, गर्व से फूली जा रही
कभी इधर तो कभी उधर
डिब्बे में उसे थी पटक रही।
रह न पाई अब चुप पेन्सिल
आया उसको भी ताव
मत कर घमण्ड इतना री
ओ फूली-फूली नाव।
जब तक चलती रहती तुम
तब तक ही तो मान पाती हो
खत्म हुई जब स्याही तुम्हारी
कूड़े में डाली जाती हो।
देख मुझे, मैं खुद पर
कभी घमण्ड नहीं करती
घिस भी जाऊँ तो फिर-फिर
दुल्हन सी संवरती जाती।
जब तक रहता वजूद मेरा
मैं कूड़ा नहीं बनती हूँ
कभी-कभी ही काम आऊँ चाहे
तुमसे, लम्बी उम्र पाती हूँ।
जो इतराते हैं खुद पर
वो जल्दी भी मिट जाते हैं
धीरज धरकर जो काम करें
वह धीर बन, मान पाते हैं।

-दीवान सिंह कठायत

ज्योतिष की बातें- 207

15 दिसम्बर 2024 को सूर्य अपनी मित्रराशि धनु में प्रवेश करेगा। अत: अत्यन्त शुभ रहेगा। अगले एक माह स्वास्थ्य, सम्मान, कीर्ति, सफलता आदि अपने कारक विषयों में सूर्य तुला, कर्क, मीन व मकर राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

खरमास प्रारम्भ- सूर्य के गुरु की राशि में गोचर करने के कारण अगले एक माह तक विवाह आदि शुभ कार्य स्थगित रहेंगे।

गीता जयन्ती- मार्गशीर्ष्ठ शुक्लपक्ष एकादशी अर्थात् मोक्षदा एकादशी के दिन ही गीता जयन्ती मनाई जाती है। तदनुसार बुधवार 11 दिसम्बर 2024 को गीता जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश प्रदान किया था। अत: हम सबको इस दिन गीतापाठ अवश्य करा चाहिए।

दत्तात्रेय जयन्ती- मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी तिथि में दत्तात्रेय जयन्ती मनाई जाती है। अत: शनिवार 14 दिसम्बर 2024 को दत्तात्रेय जयन्ती मनाई जाएगी। भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों में दत्तात्रेय की गणना होती है। भगवान दत्तात्रेय ने चौबीस गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की थी। जिन जातकों की जन्मकुण्डली में गुरु कमजोर है उन्हें दत्तात्रेय जयन्ती का पर्व अवश्य मनाना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 98

शादी एक इवेंट

आजकल विवाह संस्कार एक इवेंट मैनेजमेंट की तरह बन गया है। फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी आदि के कारण शादी से सम्बन्धित प्रत्येक रश्म को अतिविस्तृत रूप देकर भव्य तरीके से आयोजित किया जाता है। जो महिला संगीत, हल्दी, तेल आदि की प्रक्रिया सहज में घर के अन्दर हो जाती थी वह अब समारोह पूर्वक कैमरों की नजरों में होने लगी है। छोटी से छोटी रश्म की वीडियोग्राफी होती है। कैमरामैन जैसे ही कहता है इधर देखो, इधर देखो, इतने में ही सारे फोटो कृत्रिम हो जाते हैं, सहजता समाप्त हो जाती है। प्रत्येक छोटी सी छोटी चीज को भव्य रूप देने से लाखों करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। इसी को देखा देखी गरीब आदमी भी अपने बच्चों की शादी इसी प्रकार भव्य तरीके से करना चाहता है फिर वह भी लाखों का कर्ज लेकर हमेशा के लिए कर्ज की तले दब जाता है।

शादी में तामझाम इतना अधिक बढ़ गया है कि इससे ऊबकर कुछ लोग शादियाँ अब कोर्ट में करने लगे हैं, कुछ मन्दिरों में करने लगे हैं । अब तो सामूहिक विवाह का भी प्रचलन चल पड़ा है, भले ही यह शास्त्रविरुद्ध हो। यह सारा तामझाम शास्त्रसम्मत नहीं है। जानकी मंगल, पार्वती मंगल, विवाह संस्कार पद्धति आदि ग्रन्थों में जो रीति रस्म लिखी है उतना ही केवल विवाह कार्यक्रम में पर्याप्त होता है। इसके अतिरिक्त जो भी है वह अनावश्यक है। इस तामझाम से दूर रहना चाहिए क्योंकि विवाह एक संस्कार है, तमाशा नहीं।

-सरल

ला-नीना होगा सक्रिय, कड़ाके की ठण्ड

हल्द्वानी। मौसम विज्ञानियों ने कहा है कि ठण्ड के मौसम में ला-नीना का सक्रिय होना अब तय है। ला-नीना के प्रभाव में दिसम्बर मध्य से फरवरी मध्य तक कड़ाके की ठण्ड रहेगी। पहले ला-नीना के 15 नवम्बर से सक्रिय होने का अनुमान था लेकिन इसमें कुछ देरी हो गई। ला-नीना और अल-नीनो एक मौसमी घटनाक्रम है। अल-नीनो के सक्रिय होने की वजह से इस बार गर्मियों के मौसम में प्रचण्ड गर्मी पड़ी थी वहीं ला-नीना के प्रभाव से ठण्ड बढ़ती है। इसके प्रभाव से प्रशान्त महासागर के तापमान में यह छोटा बदलाव पूरी दुनिया के मौसम को प्रभावित करता है। मौसम विज्ञानियों ने पहले अनुमान लगाया था कि 15 नवम्बर से ला-नीना सक्रिय हो जाएगा और कड़ाके की ठण्ड पड़ने लगेगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इस वजय से नवम्बर में सामान्य रूप से ही ठण्ड पड़ी।

बनकोट महोत्सव में मनमोक प्रस्तुतियां

गणाई गंगोली। बनकोट शरदोत्सव में मनमोहक प्रस्तुतियों ने लोगों का मनोरंजन किया। विधायक फकीर राम टम्टा ने महोत्सव का शुभारम्भ किया।

शरदोत्सव के रूप में किये गये कार्यक्रम में विभिन्न विभागों सहित स्थानीय लोगो ने स्टाल भी लगाए थे। मंचीय प्रस्तुतियों के लिये स्थनीय कलाकार और स्कूल के बच्चों ने सुन्दर प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर दीपक महरा, जे.पी. चन्याल, शरदोत्सव समिति के अध्यक्ष रविन्द्र बनकोटी, प्रमोद कुमार बनकोटी, सूरज बनकोटी, दिनेश बनकोटी आदि थे। संचालन मोहन जोशी ने किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

70 शहरों के लिये मास्टर प्लान

देहरादून। शहरी विकास एवं आवास मंत्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल ने राज्य में मास्टर प्लान लागू होने से हो रही देरी पर नाराजगी जताते हुए 70 शहरों के लिये जल्द मास्टर प्लान तैयार करने के निर्देश दिये हैं। कहा प्रदेश में मानचित्र स्वीकृति और मास्टर प्लान लागू करने में हो रही कठिनाइयों को जल्द दूर किया जाए।

अगस्त में भर्ती का परिणाम जारी

पिथौरागढ़। अगस्त में ट्रेडमेन समेत 129 पदों पर आयोजित भर्ती के परिणाम जारी हो चुके हैं। इस बीच प्रादेशिक सेना भर्ती के भर्ती सम्पन्न हुई जिसमें ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार, मध्य प्रदेश, यूपी, उत्तराखण्ड के करीब 50 हजार से अधिक युवाओं ने भाग लिया। कर्नल प्रदीप माहरा ने बताया कि 26 अगस्त से एक सितम्बर के बीच हुई भर्ती के परिणाम जारी कर दिये गये हैं।

नगरपालिका में शामिल हुए गाँव

भीमताल। नगर पालिका रामनगर की सीमा के विस्तारीकरण के बाद कुछ गाँवों को नगर पालिका में मिला दिया गया है। साथ ही बचे हुए गाँवों को निकटतम गाँवों से जोड़कर नई ग्रामसभा को बनाया गया है। सीडीओ अशोक कुमार पाण्डे ने बताया कि बताया कि रामनगर के राजस्व गाँव चोरपानी, शिवलालपुर पाण्डे, शिवलालपुर गौजानी और कानिया को नगर पालिका में शामिल कियी गया है।

भूमि बचाने के संकल्प को दोहराया

बाजपुर। बीस गाँव की 5838 एकड़ भूमि के भूमिधरी अधिकारों को लेकर तहसील परिसर में चल रहा भूमि बचाओ सत्याग्रह आन्दोलन पिछले डेढ़ साल से जारी है। सरकार की ओर से कई बार आश्वासनों के बाद भी समाधान न होने से नाराज किसानों ने भूमि बचाने का संकल्प दोहराते हुए आन्दोलन जारी रखने की बात कही।

खतौनी पोर्टल चालू करने की मांग

काशीपुर। किसान विकास क्लब की बैठक में किसानों ने फसल बोने को एनपीके और डीएपी नहीं मिलने से हो रही परेशानियों पर विस्तार से चर्चा के अलावा खतौनी पोर्टल चालू करने की मांग उठाई। साथ ही दोगुने रेट में खाद खरीदने पर नाराजगी भी जताई।

नेचर गाइड भर्ती में दें स्थानीय आरक्षण

कालाढूंगी। रामनगर वन प्रभाग के कालाढूंगी रेंज में दिसम्बर माह में कार्बेट सफारी शुरू हो चुकी है। इसके लिये नेचर गाइड के रूप में स्थानीय युवाओं को आरक्षण की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा गया। वन क्षेत्राधिकारी से उम्मीद की कि वह क्षेत्र के युवाओं को अवसर देंगे।

सर्वे में टनकपुर, पूर्णागिरी, चूका, बरुला, मलार, बागेश्वर तक स्टेशन

टनकपुर। बहुप्रतीक्षित और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन के फाइनल सर्वे में स्टेशन तय किये गये हैं। फाइनल रिपोर्ट के बाद पूरी पड़ताल होगी।

कार्यदायी संस्था ने रेलवे को सर्वे की फाइनल रिपोर्ट सौंप दी है। पूर्वोत्तर रेलवे के के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने बताया कि फाइनल रिपोर्ट की स्वीकृति मिलने के बाद आगे कार्य शुरू हो सकेगा। 170 किमी लम्बी लाइन में 49 हजार करोड़ की लागत का आंकलन किया गया है। नोएडा की स्काई लार्क इंजीनियरिंग डिजाइनिंग प्रा.लिमिटेड को रेलवे ने सर्वे का कार्या सौंपा था।

तीन साल तक कम्पनी की ओर से कई चरणों में यह सर्वे हुआ और पिलर लगाये गये। सर्वे में स्टेशन टनकपुर, पूर्णागिरी, चूका, दियूरी, अमौन, सुला, बरुला, मलार, नाली माली, हटोली, बागेश्वर रखा गया है। इसके लिये कुल 452 हेक्टेयर भूमि के अधिग्रहण की बात कही गई है। इसमें निजी जमीन 27 हेक्टेयर प्रस्तावित है।

पांखू-कोटगाड़ी सड़क की आफत बनी

थल। पांखू क्षेत्र में सड़क की हालत पर हमेशा से बबाल मचता रहा है। अब पांखू-कोटगाड़ी सड़क की आफत मची है। क्षेत्र का प्रसिद्ध कोटगाड़ी मन्दिर क्षेत्र हर समय बाहर से आने वाले यात्रियों श्रद्धालुओं की आवत-जावत से घिरा रहता है लेकिन सड़क के हाल देखकर अच्छा सन्देश नहीं जा रहा है।

पांखू-कोटगाड़ी सड़क का डामर उखड़ने जगह-जगह गड्ढे बने चुके हैं और दुर्घटना का खतरा बना रहता है। सड़क पर गड्ढे होने से वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। क्षेत्रवासी जान जोखिम में डालकर यात्रा करने को मजबूर हैं। बरसात के दिनों में यह सड़क और भी खतरनाक हो जायेगी। सड़क की बदहाली के लिये लोगों ने कई बार शिकायत कर दी है लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। ग्रामीणों ने जनप्रतिनिधियों से एक बार फिर सड़क की बदाहाली की शिकायत करते हुए इसे ठीक करवाने की मांग की है ताकि दुर्घटना से बचा जा सके। सड़क की जाँच में पाया गया कि खतरे बने गड्ढे हैं। जाँच के बाद अवर अभियन्ता विनोद प्रकाश ने कहा कि जल्द ही टीम भेजकर सड़क को दुरुस्त किया जायेगा।

मनगढ़ में खड़िया खनन रोका जाए

बेरीनाग। मनगढ़ के ग्रामीणों ने उनके इलाके में खड़िया खनन रोककर ग्राम को बचाने की गुहार लगाई है। उपजिला धिकारी को ज्ञापन देते हुए ग्रामीणों ने कहा कि खनन से यह गाँव आपदा की जद में है। बीते मानसूनकाल में आपदा ने उन्हें बहुत नुकसान किया है। खड़िया खनन के कारण पूरा इलाका डरा हुआ है। प्रधान राजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में तहसील कार्यालय में एसडीएम श्रेष्ण गुनसोला को ज्ञापन सौंपते हुए ग्रामीणों ने कहा कि बीते मानसूनकाल में आपदा ने उनके गाँव में कहर बदपाया। कई मकान खतरे में आ गए इसका मुख्य कारण खड़िया खनन रहा।

ग्रामीणों ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उनकी सुरक्षा को देखते हुए खड़िया खनन नहीं रोका गया तो वो उग्र आन्दोलन करेंगे। ज्ञापन देने वालों में बलवन्त सिंह, कबिन्द्र सिंह, इन्द्र सिंह, गोपाल सिंह, भवान सिंह, राजन सिंह, पुष्पा देवी, चन्द्रा देवी आदि थे।

गंगोलीहाट कालेज शिफ्ट तमाशा बना

गंगोलीहाट। बड़ी उम्मीदों के साथ गंगोलीहाट में एक डिग्री कालेज खुला था और जान्हवी नौले के पास टीन सेड में इसकी शुरुआत हुई और भवन निर्माण का कार्य लम्बी कार्यवाही के बाद सिमलकोट स्थित चौड़िका में किया गया। भवन तैयार होने तक भी कई तरह के तमाशे देख गये। भवन बनने और इसके विरोध के बीच डिग्री कालेज के प्राचार्य बदले, स्टाफ बदला। अपने जिस उद्देश्य के लिये कालेज बना था वह आज भी अधूरा है। मात्र प्रवेश लेकर डिग्री ले लेना कुछ बच्चों को सुविधा लग सकता है परन्तु गंगावली में इतना भर होना हास्यास्पद है क्योंकि यहाँ के विद्वान मान रहे थे आदि कवि गुमानी की धरती जो जंगम बाबा के संस्कृति विद्यालय का केन्द्र भी रही है, डिग्री कालेज अपने सारे विषयों के साथ शिक्षा का बड़ा केन्द्र होगी लेकिन ऐसा नहीं हो सका। ऊपर से कालेज के भवन बनने से लेकर इसमें शिफ्ट होने तक हंगामा मचा है। चौड़िक में कालेज शिफ्ट का विरोध कर रहे छात्र नेताओं का कहना है कि पहले नये भवन तक सड़क का निर्माण किया जाए। यह मांग जायज भी है।

पायर फिल्म का जश्न, स्वागत किया

बेरीनाग। टालीन ब्लैक नाइट्स फिल्म फेस्टिबल में ऑडियंस अवार्ड विजेता फिल्म पायर के कारण क्षेत्र में जश्न मनाया गया और इसके नायक-नायिका के यूरोप से लौटने पर भव्य स्वागत किया गया। फिल्मकार विनोद कापड़ी के गाँव में विशेष जश्न मनाया गया। कापड़ी ने इस फिल्म के लिये बेरीनाग के विभिन्न गाँवों में शूटिंग की थी। ओखड़ा पुरानाथल निवासी पदम सिंह और गड़तिर निवासी हीरा देवी ने पदम सिंह बूबू और हीरा आमा का किरदार निभाया था। फिल्म की सफलता पर क्षेत्रवासियों ने फिल्मकार विनोद और नायक-नायिक का स्वागत करते हुए कहा कि इनकी मेहनत से विश्व स्तर पर पुस्कार मिलना क्षेत्र के लिये सम्मान की बात है। इससे हमारी पहाड़ी संस्कृति को दुनिया के सामने लाने का अवसर मिला। फिल्म में पहाड़ की संस्कृति के साथ ही इसकी पीड़ा को दर्शाया गया है।

नन्दादेवी राजजात-26 यात्रा की तैयारी

चमोली। आगामी नन्दादेवी राजजात यात्रा 2026 की तैयारियों को लेकर कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक में यात्रा के सुचारू एवं सुगम संचालन को लेकर चर्चा की गयी। बैठक में कर्णप्रयाग विधायक अनिल नौटियाल, थराली विधायक भूपाल राम टम्टा व जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने यात्रा की तैयारियों को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को विधायकों, जन प्रतिनिधियों के साथ मिलकर औचित्य के प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिए। कहा कि जो भी प्रस्ताव बनाएं उनकी एक प्रति सम्बन्धित विधायकों को भी अवश्यक उपलब्ध कराएं। उन्होंने पड़ावों के अनुसार कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। यात्रा पड़ाव में पड़ने वाले सड़क मार्ग, पैदल मार्ग, पार्किंग के निर्माण कार्यों के प्रस्ताव उपलब्ध कराने और आपदा प्रभावित क्षेत्रों के उपचारात्मक कार्य आपदा मद से करवाने के निर्देश दिए। बैठक में पीडी आनन्द सिंह, नन्दा राजजात समिति के महामंत्री भुवन नौटियाल, पर्यटन अधिकारी बृजेन्द्र पाण्डे भी मौजूद थे।

स्वतंत्रता सेनानी पांगती की प्रतिमा

मुनस्यारी। आजादी की लड़ाई में शहीद हुए स्वतंत्रता सेनानी त्रिलोक सिंह पांगती की प्रतिमा का अनावरण किया गया। जिला योजना के तहत 21 लाख रुपये से शहीद की प्रतिमा और पार्क का निर्माण किया गया। इस अवसर पर जिपं सदस्य जगत सिंह मर्तोलिया, खुशाल सिंह धर्मशक्तू, लक्ष्मण पांगती, अवर अभियन्ता कमलेश कोहली मौजूद थे।

पंचायतें प्रशासकों के हवाले

देहरादून। राज्य सरकार ने पंचायतों में 6 माह के लिए प्रशासक तैनात किये हैं। ग्राम पंचायतों को सम्बन्धित विकास खण्ड के सहायक विकास अधिकारी और क्षेत्र पंचायतों को उप जिलाधिकारी देखेंगे। हरिद्वार को छोड़ शेष 12 पंचायतों का कार्यकाल 30 नवम्बर को पूरा हो चुका है। राज्य सरकार पंचायतों में अभी ओबीसी आरक्षण तय नहीं कर पाई है जिस कारण चुनाव प्रक्रिया में समय लग रहा है।

परिक्रमा

कोसी बांध को खतरा, प्रदर्शन

रुद्रपुर। तहसील बाजपुर में मशीनों से हो रहे खनन के खिलाफ ग्राम प्रधानों ने डीएम कार्यालय में प्रदर्शन किया और ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि माइनिंग कम्पनी को कोसी में खनन पट्टा स्वीकृत है लेकिन मशीनों को रोका जाए इससे कोसी बांध को खतरा है। बांध के निकट कई गाँव आते हैं और जलस्तर कम होने के कारण जल संकट भी होगा।

दन्या कालेज में कैरियर काउंसलिंग

दन्या। रा.महाविद्यालय दन्या में अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सदस्यों राज एवं निधि राणा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिये कैरियर काउन्सलिंग सेल द्वारा करियर सम्बन्धित जानकारी दी गई। इससे पूर्व प्राचार्य डॉ.देवराज मिश्रा ने अपने भारतीय संविधान की विशेषताओं पर व्याख्यान दिया। संचालन डॉ.ललिता जोशी ने किया। इस मौके पर डॉ.डीके चन्दोला भी थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अब यादें शेष

जब यूकेडी के त्रिवेन्द्र पंवार ने संसद में फैंके थे पर्चे

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

24 नवम्बर 2024 की देर रात्रि ऋषिकेश के नटराज चौक के पास भीषण दुर्घटना में यूकेडी के नेता त्रिवेन्द्र पंवार समेत दो की मौत हो गई। तेज रफ्तार सीमेन्ट से लदे ट्रक ने वेडिंग प्वाइंट के सामने खड़ी 5 गाड़ियों को टक्कर मारी, इसी में यूकेडी के पूर्व केन्द्रीय अध्यक्ष त्रिवेन्द्र थे। पंवार के साथ लालतप्पड़ निवासी गुरजीत सिंह की भी मौत हो गई। यह लोग विवाह समारोह में शामिल होने आए थे, इसी दौरान यह भीषण हादसा हुआ।

उत्तराखण्ड की राजनीति में त्रिवेन्द्र सिंह पंवार की शख्सियत काफी अहम मानी जाती थी और आन्दोलनकारी में उनकी एक खास पहचान और सम्मान था दे ा की संसद में दो युवकों के कूदने की घटना सुर्खियों में है। हालांकि अभी तक इन युवकों और पकड़े गए अन्य साथियों की मांग और मकसद साफ नहीं हो सकी है। ऐसे में विरोध के इस तरीके को सही नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस घटना ने उत्तराखण्ड आन्दोलन की एक अहम घटना की याद जरूर दिलाई है। जब यूकेडी के युवा नेता त्रिवेन्द्र सिंह पंवार ने संसद भवन की दर्शक दीर्घा से नारेबाजी करते हुए सदन में पर्चे फैंके थे। ऐसा करके उन्होंने भारत सरकार समेत देश और दुनिया मीडिया का ध्यान अपनी ओर खींचा था। इस घटना से उत्तराखण्ड में आन्दोलन को भी तेजी मिली और तभी से अलग राज्य बनने का माहौल और तेजी के साथ शुरू हो गया। लेकिन अफसोस है कि उत्तराखण्ड आन्दोलन के तमाम दस्तावेजों में यह घटना शामिल नहीं की गई।

घटना को याद करते हुए पंवार ने बताया था- 'तारीख 23 अप्रैल 1987 थी। तब मैं 32 साल का युवा था और यूकेडी का केन्द्रीय उपा यक्ष था। दिल्ली में संसद भवन पहुँचा और पास हासिल कर सुबह ही दर्शक दीर्घा में जाकर बैठ गया, मेरे हाथ में उत्तराखण्ड राज्य की मांग को लेकर लिखे पर्चों का बण्डल था। दोपहर से कुछ पहले सदन की कार्यवाही चल रही थी तो नारेबाजी करते हुए करीब 35-40 पर्चे सदन में फैंक दिये। इससे वहां अफरा तफरी मच गई। ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कर्मियों ने गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद यह खबर पूरे देश में आग की तरह फ़ैल गयी। सरकार से सदन में पंवार के पर्चे उछालने के मुद्दे पर सवाल पूछे गए।' पंवार ने बताया कि इस कदम को उठाने की प्रेरणा उन्हें सरदार भगत सिंह से मिली थी। वे शान्तिपूर्ण ढंग से अपनी बात देश की लोकसभा में बैठे सांसदों और तत्कालीन कांग्रेस सरकार तक पहुँचाना चाहते थे। हमारा मानना था कि उत्तराखण्ड का जनमानस लगातार अलग राज्य की मांग कर रहा था, उत्तर प्रदेश के साथ रह कर इस पहाड़ी क्षेत्र का विकास नहीं हो पा रहा था, लेकिन सरकार की कान में जूं तक नहीं रेंग रही थी। ऐसे में उन्होंने राज्य के लोगों के की बात को वहाँ तक पहुँचाने के लिए ये खतरनाक कदम उठाया। तब करीब 15 मिनट के लिए सदन की करवाग्र रोक दी गयी थी। अपने इस दुस्साहस भरे कदम को लेकर पंवार कहते हैं- मैं जानता था कि इसके परिणाम बेहद खतरनाक हो सकते हैं। लेकिन अलग राज्य बनाने के जूनून ने उन्हें यह शांतिपूर्ण कदम उठाने के लिए मजबूर किया। खुफिया एजेंसियों से पूछताछ में मैंने सब कुछ बता दिया। घटना के 24 घंटे के अंदर उनकी पूरी जानकारी जुटा ली गयी। इसके बाद उन्हें तिहाड़ जेल भेज दिया गया, जहाँ से 48 घंटे के बाद उन्हें छोड़ दिया गया। इन 48 घण्टों में सुरक्षा कर्मियों और खुफिया अफसरों ने पेशेवर तरीके से उन्हें टॉर्चर किया। लेकिन वे अपनी बात पर अडिग रहे। पंवार बताते हैं कि इस घटना को सुरक्षा में चूक मानते हुए संसद भवन की सुरक्षा में लगाए करीब 70 से 80 कर्मियों और अफसरों को सस्पेंड कर दिया गया था। हालांकि पंवार मंगलवार की घटना का समर्थन नहीं करते है, उनके मुताबिक विरोध का ये तरीका गलत है और ये जब कोई मकसद ही स्पष्ट नहीं है तो इसे जायज नहीं ठहराया जा सकता। उत्तराखण्ड आन्दोलन एक जनान्दोलन था और इससे लाखों लोग जुड़े थे जिसका मकसद साफ था कि हमें अलग उत्तराखण्ड राज्य चाहिए। रोजगार के मुद्दे पर भी उन्होंने सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि साल दर साल बेरोजगारों की फौज बढ़ती जा रही है। इसके सापेक्ष सरकार के पास इन बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए कोई नीति ही नहीं है। उत्तराखण्ड की जनता ने जिस उद्देश्य को लेकर राज्य की लड़ाई लड़कर इस राज्य को हासिल किया, उस अवधारणा को पिछले 24 सालों में उत्तराखण्ड में सत्ता पर बैठने वाली ने कुचलने का प्रयास किया और जनता की आवाज को दबाने का काम किया। उन्होंने कहा कि आज उत्तराखण्ड में लोगों को शिक्षा और चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। बेरोजगारी और पलायन तेजी से बढ़ रहा है। ग्रामीणों की फसलें भी लगातार जंगली जानवर चौपट कर रहे हैं।'

उत्तराखण्ड आन्दोलन की एक पहचान थे त्रिवेन्द्र पंवार

जगमोहन रौतेला

सवेरे लगभग 5:45 बजे का वक्त था। गत 25 नवम्बर को मैं उठने के बाद हाथ मुंह धो कर अपने कमरे की ओर बढ़ रहा था। इतने में फोन की घण्टी बजी। वह फोन गढ़ीकैंट, देहरादून में रहने वाले भिनज्यू और उक्रांद के पूर्व महासचिव किशन सिंह मेहता का था। इतने सवेरे उनका फोन देखकर मन में एक आशंका उठी और लगा कि शायद कोई पारिवारिक दुर्घटना हुई है। जब मैंने फोन उठाया तो दूसरी ओर से भिनज्यू सीधे बोले, जगमोहन एक बहुत बुरी खबर है। मैंने कहा, क्यों क्या हुआ? बोले, तुमने नहीं सुना क्या? त्रिवेन्द्र पंवार जी का कल रात घर के पास ही रोड एक्सीडेंट में निधन हो गया है। मेरे मुंह से निकला, यह क्या कह रहे हो?

वह बोले, बिल्कुल सही बात है। इतना सुनते ही मेरी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। कुछ समझ नहीं आ रहा था। मन यह बिल्कुल स्वीकार नहीं कर रहा था कि एक ऐसी दुर्घटना हो चुकी है, जिसमें त्रिवेन्द्र पंवार अनंत यात्र पर जा चुके हैं। कुछ समय बाद अखबार आया तो मैंने तुरन्त अखबार खोला तो पहले ही पेज में यह दुखदाई खबर छपी थी। उसके बाद शरीर जैसे सुन्न हो गया।

त्रिवेन्द्र 24 नवम्बर की रात लगभग 10 बजे ऋषिकेश में इन्द्रमणि बडोनी चौक (नटराज चौक)के पास देहरादून रोड स्थित एक वेडिंग पॉइंट में वरिष्ठ भाजपा नेता भगत राम कोठारी के बेटे की शादी में शामिल होने गए थे। वहाँ से वह घर जाने के लिए निकल रहे थे। बाहर आकर कुछ लोगों के साथ बातचीत करने लगे। इसी दौरान देहरादून की ओर से आ रहे, एक तेज रफ्तार ट्रक ने गलत दिशा में आकर वहाँ खड़ी कारों को टक्कर मार दी। जिसमें त्रिवेन्द्र पंवार और दो युवक गम्भीर तौर पर घायल हो गए। कई लोगों ने भाग कर अपनी जान बचाई। पर, त्रिवेन्द्र पंवार और दो अन्य लोगों को अपनी जान बचाने के लिए भगाने का कोई मौका नहीं मिला। वेडिंग पॉइंट के बाहर दुर्घटना होते ही वहाँ अफरातफरी मच गई। जब लोगों को यह पता चला कि दुर्घटना में घायल होने वालों में उत्तराखण्ड क्रांति दल के संरक्षक और पूर्व अध्यक्ष त्रिवेन्द्र पंवार भी शामिल हैं, तो वहाँ सब सकते में आ गए। तुरन्त ही पुलिस को दुर्घटना की जानकारी दी गई। दुर्घटना होते ही ट्रक ड्राइवर घटनास्थल से फरार हो गया। पुलिस के आने के बाद बड़ी मुश्किल से निकाला लेकिन अस्पताल पहुँचने तक इनकी मृत्यु हो गई। जिसने भी सुना वह घटनास्थल की ओर चल पड़ा। जिनमें से बहुत सारे लोग ऋषिकेश एम्स पहुँच गए। वहाँ उनके मौत की खबर मिलते ही मातम पसर गया। त्रिवेन्द्र पंवार अपने पीछे पत्नी, एक विवाहित बेटे और दो विवाहित बेटियों के परिवारों को शोकाकुल छोड़ गए हैं। लगभग 69 वर्ष के त्रिवेन्द्र पंवार का जन्म टिहरी जिले के भदूरा पट्टी, लम्बगांव के भरपुरिया गाँव में चन्दन सिंह पंवार के घर हुआ था। उनके पिता चन्दन सिंह पंवार का भी लगभग 100 वर्ष की उम्र में 31 जनवरी 2022 को ही निधन हुआ है।

उससे पहले त्रिवेन्द्र पंवार को अपने 30 वर्षीय पुत्र का शोक भी सहन करना पड़ा था। उनके अविवाहित छोटे पुत्र राकेश पंवार की डेंगू से 11 नवम्बर 2016 को देहरादून के एक अस्पताल में मृत्यु हो गई थी। अपने जवान पुत्र की असामयिक मौत से त्रिवेन्द्र पंवार मानसिक तौर पर टूट गए थे। उन्होंने लगभग एक साल तक अपने आप को राजनीतिक और दूसरी गतिविधियों से अलग कर लिया था। पर धीरे-धीरे राज्य की राजनीतिक स्थितियों को देखते हुए वह पुत्र शोक को भुलाते हुए समाज में सक्रिय थे।

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों के साथ-

एम.डी.एम.

एजूकेशनल

एकेडमी

टनकपुर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

सम्पर्क 7351285555

नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION	LIVE MUSIC	HOMELY FOOD	BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों के साथ-

भूपाल सिंह बरफाल

जोहार कलोनी, पुलिस लाइन पिथौरागढ़

देवेन्द्र सिंह पांगती

जोहार कलोनी, पुलिस लाइन पिथौरागढ़

धीरेन्द्र सिंह धर्मशक्तू

व्यापार संघ अध्यक्ष

जौलजीवी

शकुन्तला दताल

समाजसेवी

जौलजीवी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)